प्रेम चंद

के साहित्य में विविध विमर्श

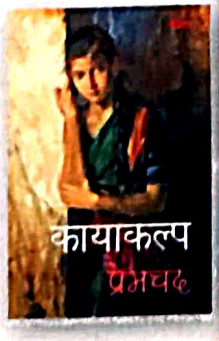

प्रधान संपादक

डॉ. सुप्रिया सिंह

श्री राजीव गोंड

सह संपादक

डॉ. अतुल कुमार पाण्डेय

डॉ. आशीष

प्रेमचंद के साहित्य में विविध विमर्श

सम्पादक-डॉ. सुप्रिया सिंह, श्री राजीव गोंड
सह सम्पादक-डॉ. अतुल कुमार पाण्डेय, डॉ. आशीष

राशि : Rs. **470.00**
प्रकाशन वर्ष : **2024**

ISBN : **978-93-92348-56-3**

प्रकाशक/लेखक की अनुमति के बिना पुस्तक या इसके किसी भी अंश को संक्षिप्त परिवर्धित कर प्रकाशित करना, फिल्म बनाना क़ानूनन अपराध है।

© **प्रकाशक**

हंस पब्लिकेशन हाउस

दिल्ली - 4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली -110002

वाराणसी- लमही, वाराणसी.उत्तर प्रदेश-221007
Mob. : +91-9044798756, +91-9721652681
E-mail : premchandhans1880@gmail.com
Web. : www.premchandpath.com

वितरकः-

शिवालिक प्रकाशन

4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली -110002

आवरणः- **बच्चे लाल वर्मा**
पृष्ठ-सज्जा एवं कम्पोज़िग ले-आउट : **राम जी सिंह**
मुद्रक : आर० के० ऑफसेट, दरियागंज, नई दिल्ली

Published in India
Published by Usha Gaur for **HANS PUBLICATION HOUSE**, lamahi, Varanasi Uttar Pradesh 221007 Type Setting Shivkur Maurya and Printed by R.K. Offset Printers, Delhi.

9. प्रेमचदं के उपन्यासों में सामाजिक विमर्श
डॉ. राखी. के. शाह 64
10. प्रेमचंद के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज
डॉ. कल्पना बघेल 73
11. प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण जीवन
डॉ. सरोज चक्रधर 79
12. प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण जीवन
प्रोफेसर (डॉ.) वै. कस्तूरी बाई 85
13. प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण-जीवन एवं संस्कृतिः 'ईदगाह' कहानी के संदर्भ में
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन 88
14. प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त ग्रामीण समाज
डॉ.मोहित मिश्रा 94
15. प्रेमचंद के साहित्य में आशावादी दृष्टिकोण
डॉ. अश्विनी सचिन सदावर्ते 100
16. प्रेमचंद के साहित्य की प्रासंगिकता
डॉ. पुष्पांजलि रंजन 104
17. प्रेमचंद : आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद
डॉ. क्षितिजा 108
18. प्रेमचंद के साहित्य में आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद
ज्योत्सना आर्य सोनी 112
19. प्रेमचंद के कथा-साहित्य के स्त्री पात्र एवं आधुनिक स्त्री की संकल्पना
डॉ. शशि कला जायसवाल 116

प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण-जीवन एवं संस्कृतिः 'ईदगाह' कहानी के संदर्भ में

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

प्रस्तावनाः

भारत कृषि प्रधान बसती देश है। गाँव भारत की प्राण शक्ति है। गाँव में ही भारत की संस्कृति बस्ती है। यदि भारत को देखना अथवा समझना है तो भारत के गाँव को देखना चाहिए। भारत की संस्कृति का वास्तविक रूप गाँव में ही देखने को मिलते है। इसलिए महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। संस्कृति उस रीति का प्रतीक है, जिसके आधार पर हम सोचते, आचार-विचार, खान-पान, वेश-भूषा, कार्य, आदि के निर्वाह करते हैं। संस्कृति हवा की तरह अपरिहार्य, अनमोल, अदृश्य घटक है जो सभी के जीवन निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। मानव जीवन के सभी क्षेत्र एवं वस्तुओं में अंतर निहित है। प्रत्येक क्षेत्र विशेष की अपनी संस्कृति होती है। अर्थात प्रत्येक समुदाय के अपने आदर्श जीवन मूल्य के निर्माण में संस्कृति अहम भूमिका निभाती है। संस्कृति उस क्षेत्र विशेष की आबादी को एक सूत्र में बांधती है, जिस कारण हम समाज, परिवार,अथवा भ्रातृत्व-बंधुत्व भाव के एहसास करते हैं।

प्रेमचंद का कथा साहित्यः-

भाषा के कौशल चितेरे प्रेमचंद ने 20 से अधिक उपन्यास तथा 300 से अधिक कहानियों की रचना की है। इनके प्रत्येक उपन्यास एवं कहानी की लोकप्रियता एवं उपादेयता पर लिखना सूर्य को प्रकाश दिखाने के समान है। उनके कथा साहित्य के प्रमुख विषय एवं विशेषता ग्रामीण चित्रण है। चाहे गोदान, निर्मला, आदि उपन्यास हो या ईदगाह, पंच परमेश्वर, कफन, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, हो उनके साहित्य में ग्रामीण संस्कृति कूट-

कूटकर भरी हुई है। उनकी रचनाओं की लोकप्रियता का प्रमुख कारण उनके साहित्य में चित्रित सरल ग्रामीण जीवन है। प्रस्तुत लेख में 'ईदगाह' कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन अथवा संस्कृति पर प्रकाश डालने का अल्प प्रयास किया गया है।

'ईदगाह' कहानी का सारांश : कहानी मुसलमानों के पवित्र त्योहार ईद पर आधारित है जो शीर्षक से ही स्पष्ट है। कहानी की विशिष्टता मुख्य पात्र 4-5 साल के हामिद तथा उनकी दादी अमीना के बीच में व्याप्त प्रेम की डोरी है। कहानी पढ़कर हम भावुक हो जाते हैं। कहानी मर्म को छूने वाली है। मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संगम है। हामिद का भोलापन और उसकी हाजिर जवाबी, पाठकों को मोह लेता है। मेले में बच्चे अपनी रुचि के अनुसार खूब खरीददारी कर रहे हैं। मिठाइयां खा रहे हैं और मेले का आनंद उठा रहे हैं। लेकिन कहानी के मुख्य पात्र हामिद, अपने इंद्रियों पर काबू पाकर अपनी दादी मां के लिए चिमटा खरीदकर आता है और दादी मां उसके प्रेम और प्यार से गदगद होकर उसे दुआ देती हैं।

ग्रामीण परिवेश का मनोहर चित्रण :

पूरे 30 रोजों के बाद ईद आने पर मुसलमानों में विशेषतः बच्चों में पाई जाती त्यौहार मनाने की खुशी, उत्साह, अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, वर्ग भेदभाव, से ऊपर उठकर, धार्मिक प्रेम की गहरी समझ और सहानुभूति से भरपूर उत्साह में भरे हुए बड़े-बूढ़ों के साथ-साथ बालकों के दल भी ईदगाह की ओर बढ़ रहे हैं। ईदगाह के मेला में बच्चों के लिए कई आकर्षक चीज होती है। जैसे हिंडोला, चक्की, मनमोहक खिलौने, तरह-तरह की मिठाइयां, शरबत, लोहे के बर्तनों की दूकान आदि। प्रेमचंद की लेखनी की महिमा से इन सबका सजीव चित्रण हमारे आंखों के सामने उभर कर आ जाता है। यहां तक की प्रत्येक पाठक चाहे किसी भी उम्र के क्यों ना हो उस मेले में भाग लेने के लिए लालायित हो जाता है। मेले तथा हामिद और उनके साथियों का वार्तालाप सबके अंतर्मन में छा जाता है।

गावं में प्रकृति चित्रण :

प्रकृति मानव की जननी है। जब भी हम हरे भरे पेड़-पौधे, खेत-खलिहान, फूल-कलियाँ, वन-पर्वत, विभिन्न जलाशयों, आदि देखते हैं, मन अपने आप शांत हो जाता है। अफसोस की बात है कि डिजिटल युग की होड़ ने प्रकृति के बारे में ध्यान देने के लिए समय ही नहीं दिया। विशेषकर आज

की युवा पीढ़ी, प्राकृतिक या प्रकृति से अधिक दूर हो रही है। हम यह निस्संदेह कह सकते है कि यदि मानव अपनी सुरक्षा को बरकरार रखना चाहता है तो प्रकृति के बारे में सजग रहना है। प्रकृति को देखने से लगता है मानो वे भी हमारे सुख-दुःख में भाग लेते हैं।

कलम के सिपाही, ग्रामीण परिवेश का वर्णन यूं करते हैं, 'कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक है। आसमान पर आज कुछ अजीब लालिमा है।' इससे ग्राम में व्याप्त प्राकृतिक दृश्य का सजीव चित्रण हमें व्यक्त होता हैं।

गावं में त्यौहार का माहौल :

भारत मिश्रित धर्म एवं विभिन्न मतावलंबियों का अद्भुत संगम है। इसीलिए प्रत्येक दिन कुछ-न-कुछ त्यौहार या विशेष पूजा-पाठ, व्रत का सिलसिला होता रहता है। प्रस्तुत कहानी इस्लाम धर्म के मुख्य त्यौहार 'ईद' पर आधारित है। त्यौहार के कारण बच्चे ही नहीं बड़े-बूढ़े भी खुशी का अनुभव करते हैं। त्यौहार मनाने के लिए बेसब्री से इंतजार करते रहते हैं। इसी भांति 'ईदगाह' कहानी में ईद के उपलक्ष्य में ग्रामीण लोग किस प्रकार तैयारी करते हैं इसका नायाब पेशकश बेताज बादशाह प्रेमचंद बखूबी करते हैं।

त्यौहार चाहे एक दिन के लिए हो या अनेक दिनों के लिए, उसका विशिष्ट महत्व तथा उत्साह सदैव रहता है। भौतिक सुख के कारण आज त्यौहार मनाने की अपनी परंपरा जैसे अपने घर परिवारवाले, अड़ोस-पड़ोस, साथियों के यहाँ जाकर मिठाईयाँ बाँटकर खूब खुशियां मनाना, मौज-मस्ती करना, परस्पर सुख-दुःख को साझा करना, जैसे बहुत सारे विषयों को हम धीरे-धीरे भूल रहे हैं।

भूमंडलीकरण के इस दौर में आज समग्र विश्व को 'ग्लोबल विलेज' का नामदेय प्राप्त हुआ है। लेकिन 'विलिज' शब्द का वास्तविक अर्थ न के बराबर है। प्रस्तुत जमाने में, युवा पीढ़ी त्यौहार की आड़ में न जाने क्या क्या कर बैठे हैं। अपने शानो-शौकत दिखाने एवं वाणिज्य को बढ़ाने के लिए आजकल त्यौहार महज एक औज़ार बन गया है। चाहे त्यौहार से उक्त सामान की खरीदारी का ताल्लुक हो या नहीं, इन सब की ओर हम ध्यान न देकर त्यौहार के दौरान नए टीवी, मिक्सी, मोबाईल फोन, विभिन्न आभूषण, आदि की खरीदारी, नए फ्लैट की बुकिंग आदि करते हैं और त्यौहार सफल रूप में मनाने का ढोंग रचते हैं।

त्यौहार के दौरान, छोटे-बड़े दुकानदारों द्वारा विभिन्न प्रकार के सेल

की योजनाएं, ऑनलाइन विक्रेताओं के लिए 'द ग्रेट इंडियन सेल', विभिन्न छूट, कटौती व पैसों की बचत, जैसे विज्ञापनों के चंगुल में फंसकर हम अपने आप को कंगाल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। एक ओर त्यौहार के शहरी माहौल को, हम एक प्रकार से 'एक्स्ट्रा वैगएन्ज़ा' कह सकते हैं।

आर्थिक तंगी अथवा मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित गांव के लिए त्यौहार एकमात्र अवसर है, जिस खातिर उन्हें कुछ नए पहनने और कुछ स्वादिष्ट खाने के लिए मिले। साल भर में एक बार आने वाले त्यौहार मनाने के लिए चाहे साहूकार से पैसा उधार क्यों न लेना पड़े, त्यौहार को सफल रूप में मनाने के लिए वे कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। त्यौहार की मौज-मस्ती में अपने घर की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी कतई नहीं होती है। 'वह क्या जाने की अब्बा जान क्यों बदहवास चौधरी कायम अली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदलने तो वह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।'

ईद मनाने की ग्रामीण तैयारियाँ :

ईद मनाने के लिए बच्चे, बड़े-बूढ़े, सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। ईदगाह के मेले में खूब खुशियां मनाने के लिए मासूम बच्चे, अपने आर्थिक अभाव के बारे में ना जानते हैं, न ही सोचते हैं। वे अपने पास जो कुछ भी कपड़े, जूते, टोपी है, उसे बेहतर बनाकर और पहनकर अपने आप को सज-धज कर बेहतरीन दिखाने की होड़ में हैं। ग्रामीण बच्चों की कौतूहलता, प्रेमचंद के शब्दों में 'गांव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही है। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सुई धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भाग जाता है।' इस प्रकार गांव में त्यौहार के माहौल में अपनी दुनिया की चमक-दमक की खोज में सभी लगे हुए हैं।

ईद मनाने वाले ग्रामीणों की कर्तव्यपरायणताः चाहे ईद हो या अन्य त्यौहार, सरल जीवन बिताने गांव वाले अपने दैनिक कर्तव्य से कभी पलायन करते अथवा न पीछे हटते हैं। कलम के सिपाही के इस सजीव वर्णन से हमें यह व्यक्त होता है- 'जल्दी-जल्दी बैलों को सानी पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगा। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकडों आदमियों से मिलना-भेंटना, दोपहर के पहले लौटना संभव है।'

वहीं शहर में त्यौहार का अंदाज ही कुछ और है। मनचाहे पकवान, खाना बाहर से मंगवाना या जोमैटो, स्विग्गी आदि ऑनलाईन वेंडर्स से ऑर्डर देकर, दिन भर टीवी अथवा किसी माल या सिनेमा घर नजर आना। यह

वास्तव में त्यौहार मनाने का नया तरीका है। यह नई प्रवृत्ति पाश्चात्य प्रभाव व भूमंडलीकरण की देन है।

चाहे शहर हो या गांव, सभी जगह बच्चे तो सदैव बच्चे ही हैं। नादानी और मासूमियत से भरपूर बच्चे, भगवान का प्रतीक है। उनकी नादानी हरकतें, अजनबी, आश्चर्यजनक कल्पनाएं, वास्तव में मन को शांति व सुकून देने वाले हैं। इसी का बखूबी चित्रण कलम के जादूगर प्रेमचंद जी ने 'ईदगाह' में अनूठे ढंग से पेश किया हैं। गांव में ईद के दौरान बच्चे खुशियाँ मनाने की होड़ में अपने पास जो कुछ भी पैसे हैं, उसे बार-बार गिनकर खुश हो जाते हैं। तब यूँ कहते हैं 'उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है । बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं, इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीजें लाएंगे- खिलौने, मिठाइयां, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या? 'ग्रामीण बच्चों की यह सरल कल्पनाओं का चित्र हमारे मर्म को छूती है। लेकिन आजकल शहरों में अनूठे के दौरान बच्चों में विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक खिलौने, कंप्युटर या विडियो गेम्स या नए प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स खरीदने की आदत बढ़ गई है।

सरल जीवन और उच्च विचार :

यही ग्रामीण चिंतन अथवा संस्कृति की बुनियाद है। कहानी के मुख्य पात्र हामिद के मां-बाप, अल्लाह के प्यारे हो गए हैं। पर हमीद को यही बताया गया कि उनकी मां अल्लाह से अच्छी-अच्छी चीज लाने गई और उनके पिता रुपए कमाने गए। हामिद अपनी गरीबी से ऊपर उठकर सबके सामने बेमिसाल, बेहतरीन व्यक्ति के रूप में उभरने की कल्पना करता है - 'आखिर अब्बा जान कभी न कभी आएंगे। अम्मा भी आएंगे ही । फिर इन लोगों से पूछूंगा कितने खिलौना लोगे? एक-एक को टोकरियों खिलौने दूं और न दिखा दूं कि दोस्तों के साथ इस तरह सलूक किया जाता है।'

यहां बुराई का बदला अच्छाई से लेने की शिक्षा हमीद द्वारा दी गई है। यही हमारी संस्कृति की उत्तम प्रवृत्ति है। इसे पालन करने में सब की भलाई होगी। साथ ही बुरी प्रवृत्ति अपने आप छूट जाएगी।

धर्म की अहमियतः

धर्म संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत जैसे बहु संस्कृति बहु धर्मावलंबियों के देश में, धर्म का वास्तविक रूप दिन-ब-दिन बदल रहा है। आम आदमी पाखंडी गुरु की चपेट में आकर अपनी तथा अपने धर्म के असलियत को भूल रहा हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना ही सभी धर्म का

मूल सूत्र है। चाहे इसकी अभिव्यक्ति में भेदभाव क्यों न हो। ग्रामीण बच्चे जब खुशियां मनाने के लिए ईदगाह जाते हैं, तब वहाँ मुसलमान भाइयों द्वारा नमाज पढ़ने की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं 'नए आने वाले जाकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहां कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर है। कितना सुंदर संचालन, कितनी सुंदर व्यवस्था। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएं विस्तार और अंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थी, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र में समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।'

हाँ! यह अटल सत्य है कि किसी भी धर्म का मूलनाद, समग्र विश्व को भ्रातृत्व के सूत्र में बांधना है, न कि उन्हें तोड़ना। इस विषय को चाहे हम भ्रातृत्व भाव कहे या वसुधैव कुटुंबकम। इस मैत्री भवना की अभिव्यक्ति में देश-काल वातावरण के कारण फर्क अवश्य हो सकती है। इस मर्म को यदि हम समझ लेते तो मानव-मानव के बीच धर्म के नाम पर होने वाली अवांछित मारपीट, अहिंसा, सामुदायिक सांप्रदायिकता, भेद-भाव, जैसी पशुवत् प्रवृत्तियों से मुक्ति पाकर, भारत को पुनः सोने की चिड़िया बनाने में सक्षम होंगे।

निष्कर्षः

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद 'ईदगाह' कहानी में ग्रामीण इस्लाम संस्कृति के प्रत्येक हिस्से का सूक्षमातिसूक्ष्म चित्रण, अनुपम ढंग से पेश करके, ग्रामीण संस्कृति का परिचय देकर पाठकों को गाँव की ओर ले जाने में निस्संदेह सफलता हासिल किए हैं।

संदर्भ :-

1. https://ncert.nic.in/textbook/pdf/khat101.pdf
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/
3. https://bharatdiscovery.org/india/
4. https://www.britannica.com/topic/culture
5. https://www.kailasheducation.com/2020/06/sanskriti-arth-paribhasha-visheshtaye.html
6. https://www.drishtiias.com/hindi/paper1/indian-civilization,-present-form-of-culture-and-its-import

2A, Nellipet Cross St.
Asstt. Prof. & Head Dept. of Hindi,
Zamin Royapet, Chromepet, Vels University
Chennai 600117